ISSN 0975-735X
Peer Reviewed Journal
Impact Factor 3.471

सपादक
डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
डॉ. मीना अग्रवाल

शोध दिशा

4'9

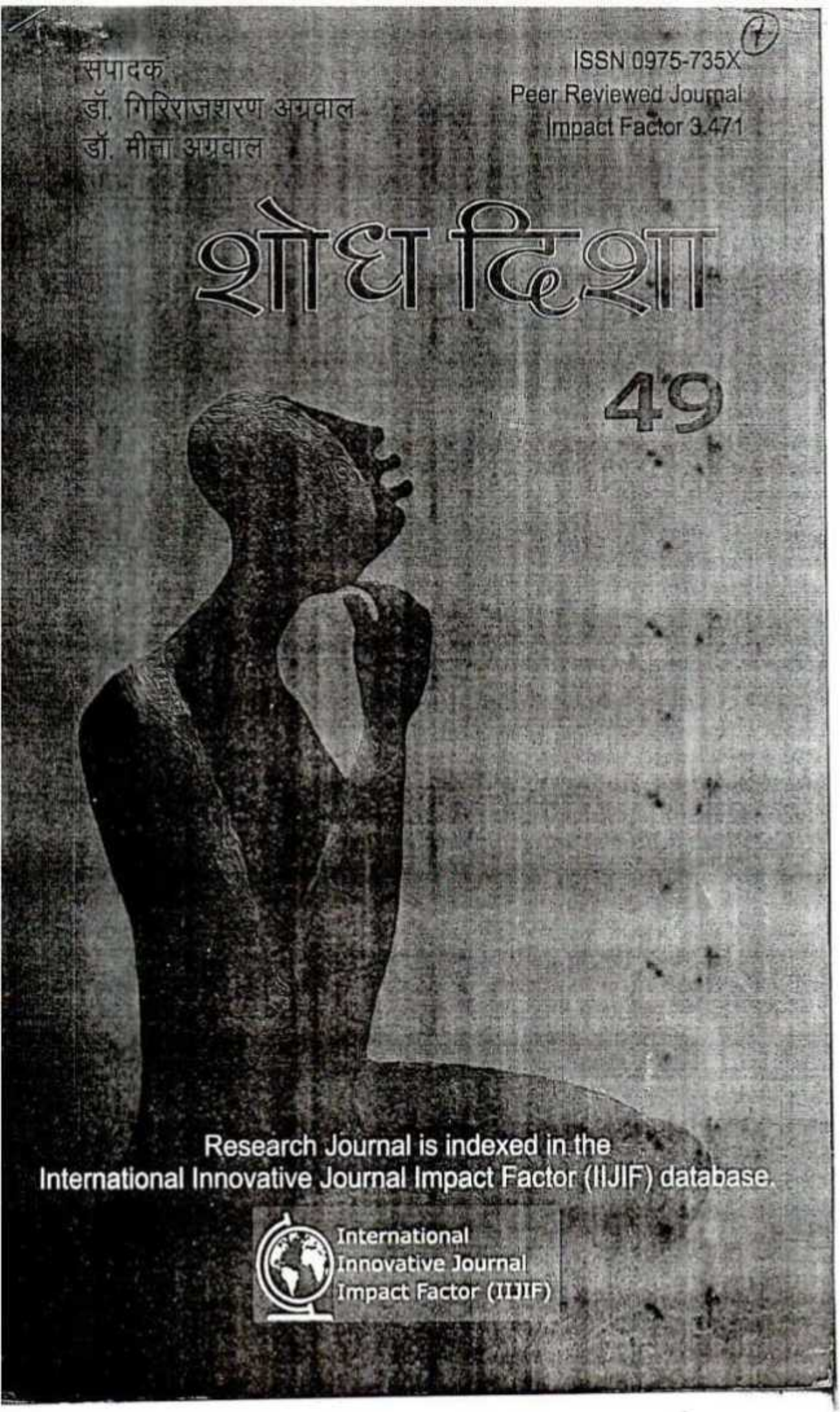

Research Journal is indexed in the
International Innovative Journal Impact Factor (IIJIF) database.

International
Innovative Journal
Impact Factor (IIJIF)

शोध दिशा

ISSN 0975-735X

विश्वस्तरीय शोध-पत्रिका
पियर रिव्यूड शोध पत्रिका

शोध अंक 49 | जून-सितंबर 2020 | 300.00 रुपए

संपादकीय कार्यालय
हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार,
बिजनौर 246701 (उ०प्र०)
फोन : 01342-263232, 07838090732
ई-मेल : shodhdisha@gmail.com
वैब साइट : www.hindisahityaniketan.com

क्षेत्रीय कार्यालय

हरियाणा
डॉ० मीना अग्रवाल
बी-203, पार्क व्यू सिटी-2 सोहना रोड,
गुड़गाँव (हरियाणा)
फोन : 0124-4076565, 07838090237

दिल्ली एन०सी०आर०
डॉ० अनुभूति
सी-106, शिवकला अपार्टमेंट्स
बी 9/11, सेक्टर 62, नोएडा
फोन : 09958070700

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

संपादक
डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल

प्रबंध संपादक
डॉ० मीना अग्रवाल

संयुक्त संपादक
डॉ० शंकर क्षेम

उपसंपादक
डॉ० रश्मि त्रिवेदी

कला संपादक
गौतिका गोयल/ डॉ० अनुभूति

उपसंपादक
डॉ० अशोककुमार 09557746346

विधि परामर्शदाता
अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

आर्थिक परामर्शदाता
ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी०ए०

शुल्क
आजीवन (दस वर्ष): व्यक्तिगत : पाँच हजार रुपए
संस्थागत : छह हजार रुपए
वार्षिक शुल्क : आठ सौ रुपए
यह प्रति : तीन सौ रुपए

प्रकाशित सामग्री से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजें। (सन् 1989 से प्रकाशन-क्षेत्र में सक्रिय)

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसैट प्रिंटर्स, बिजनौर 246701 से मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ०प्र०) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल

गिरिराजशरण अग्रवाल

द) उ॰प्र॰
शनल इंस्टीट्यूट,
द्यालय, मीरपुर,
पुर (राज॰)
य विश्वविद्यालय,
लीगढ़ (उ॰प्र॰)
वि। पीठ, पुणे

ISSN 0975-735X

अनुक्रम

संस्कृत का महत्त्व : संस्कृत विश्वविद्यालयों की स्थापना/ डॉ॰ रमेश पोखरियाल 'निशंक'	27
21वीं सदी के उपन्यासों का पर्यावरणी परिदृश्य एवं परिप्रेक्ष्य/ प्रो॰ अर्जुन चव्हाण	30
आओ हिंदी-हिंदी खेलें/ डॉ॰ एम॰एल॰ गुप्ता 'आदित्य'	41
प्रेमचंद का भाषा-चिंतन : सुझावों की नोटिस नहीं ली गई/ प्रो॰ अमरनाथ	46
हिंदी बालपत्रकारिता का सफरनामा/ डॉ॰ सुरेंद्र विक्रम	51
गीतकार पुष्पेंद्र वर्णवाल की प्रेमकाव्य कृतियों का समीक्षात्मक अध्ययन/ जयप्रकाश सिंह, डॉ॰ महेश 'दिवाकर'	64
गुरु जंभेश्वर वाणी में रहस्यवाद : एक तथ्यात्मक दृष्टिकोण/ परवीन कुमारी	75
धूमिल की लंबी कविता 'पटकथा'/ आर॰ रमेशकुमार, डॉ॰ ल॰ तिल्लै सेल्वी	82
'शब्द-कलश' में संवेदना के विविध स्वर/ संतोषकुमार, डॉ॰ महेश 'दिवाकर'	92
अपने ही चरित्र के आईने में नारी का संघर्ष/ देवी नागरानी	101
कृष्णा सोबती के उपन्यासों में अभिव्यक्त नारी-समस्याएँ/ त॰ नागपलनीवेल, डॉ॰ त॰ तिल्लैचेल्वी	106
काशीनाथ सिंह कविता की नई तारीख : एक मूल्यांकन/ डॉ॰ ओमप्रकाश	114
शमशेरबहादुर सिंह की कविताओं में ऐंद्रिक बोध/ डॉ॰ रामस्वरूप कुमार	121
शमशेरबहादुर सिंह की कविताओं में देशभक्ति का संदर्भ/ डॉ॰ रामस्वरूप कुमार	130
विषयवस्तु एवं शिल्प की दृष्टि से आदर्शोन्मुख यथार्थवाद : कथासम्राट मुंशी प्रेमचंद/ डॉ॰ रविकांत 'रवि'	137
'कालिदास-दर्शन' का उत्कृष्ट निदर्शन-'राजा प्रकृतिरंजनात्'/ डॉ॰ रजनीशकुमार पाठक	145
दलित कहानी और कहानीकार : एक परख/ डॉ॰ ओमप्रकाश	149
मन्नू भंडारी और उनका साहित्य : एक परिचय/ डॉ॰ मिनाक्षी	155
कालिदास और वनस्पतिगत पर्यावरण/ डॉ॰ अवधेशकुमार	159
सुरेंद्र वर्मा के उपन्यास परंपरा और आधुनिकता/ रोहिणी सुरेश कुलकर्णी, डॉ॰ मंजूर चाँदभाई सैयद	165
कनुप्रिया : राधा की विह्वलता का दर्पण/ रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'	169
हमारी संस्कृति में पर्यावरण-संरक्षण की भूमिका/ डॉ॰ नीतूसिंह	177
डॉ॰ कैलाश वाजपेयी के काव्य में पर्यावरणीय चेतना/ डॉ॰ भावना देवी	182

दलित कहानी और कहानीकार : एक परख

डॉ॰ ओमप्रकाश (डी॰लिट्॰)
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
आर॰के॰एस॰डी॰ कॉलेज, कैथल, हरियाणा

हाल ही में हिंदी साहित्य जगत की महत्त्वपूर्ण पत्रिका 'हंस', नवंबर-दिसंबर 2019 में दलित साहित्य विशेषांक प्रकाशित हुआ, जिसमें हिंदी साहित्य के नामचीन दलित कथाकारों की कहानियाँ पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। वैसे तो साहित्य को बाँटने की परंपरा ही स्वस्थ नहीं है, फिर भी देश को दिशा देनेवाली राजधानी दिल्ली से प्रकाशित स्वयंभू पत्रिका 'हंस' के इस कदम की अनदेखी भला कौन कर सकता है? साहित्य को टुकड़ों में बाँटने की परंपरा का ही परिणाम है कि आज दलित-विमर्श, नारी-विमर्श और आदिवासी विमर्श की दुनिया में नए-नए विमर्श जुड़ रहे हैं। यथा–वृद्ध-विमर्श एवं बाल-विमर्श आदि को भी कुछ विद्वान नया विमर्श मानने लगे हैं। हमारी सामाजिक व्यवस्था का आधार ब्राह्मण, वैश्य, क्षत्रिय, और शूद्र चार वर्णों पर आधारित रहा है। ब्राह्मणों का कार्य शुरू से ही जनता का मार्गदर्शन करना रहा है। वेदों-उपनिषदों एवं धार्मिक ग्रंथों में वर्णित नीति एवं आदर्शमूलक कथाओं के श्रवण द्वारा न केवल जनमानस में आचार संहिता का निर्माण करना बल्कि उसके भरण-पोषण का साधन भी रहा है। वैश्य का संबंध वणिक से है, यह संपन्न धनिक वर्ग है, जिसका मुख्य कार्य लाभ-हानि से जूझते हुए सभी वर्गों की सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति का करना रहा है बेशक इस उपकार के लिए वह निर्मम शोषण भी करता है। क्षत्रिय का कार्य जनरक्षा है। बाह्य आक्रमण एवं आंतरिक समस्याओं से लड़ते हुए दीन-दुखियों की सहायता करना तथा देश एवं समाज की प्रगति में योगदान देना उसका महत्त्वपूर्ण कार्य है। शूद्र का कार्य सेवा करना रहा है अर्थात् विभिन्न वर्गों के द्वारा किए गए कार्यों में रचनात्मक सहयोग देकर अपनी उपस्थिति दर्ज करवाना उसका महत्त्वपूर्ण कार्य है। अधिकांश विद्वान शूद्र वर्ग का संबंध केवल निम्न जातियों से जोड़ते हैं, यह ठीक नहीं। शूद्र से अभिप्राय ऐसे वर्ग से है, जिसका कालांतर से शोषण किया जा रहा हो। कहने का अभिप्राय है कि समाज के अभिन्न चारों वर्गों का अपना वजूद है जब तक चारों वर्णों में सहयोग की भावना नहीं होगी कोई भी देश तरक्की नहीं कर सकता। यह भी सत्य है कि जब देश की उन्नति में चारों वर्णों का सहयोग है तो उत्थान भी चारों वर्णों का एक साथ होना चाहिए था। शिक्षा के प्रचार-प्रसार के कारण आज वर्ण-व्यवस्था बदल गई है। महानगरों में किसी भी प्रकार का अंतर इन वर्णों के अंदर दिखाई नहीं देता केवल बस्तियों के आधार पर ही इनकी पहचान हो सकती है। महानगरों में ब्राह्मण, वैश्य और क्षत्रिय का कार्य सभी वर्गों के लोग कर रहे हैं, हाँ जहाँ तक बात है शूद्रकर्म की वह भी मैला ढोने जैसे घृणित या सफाई जैसे काम की उसकी जिम्मेदारी आज भी निम्नवर्ग के लोग ही निभा रहे हैं। ऐसा संभवत शिक्षा के अभाव के कारण है अथवा इस पेशे विशेष से जुड़े लोगों में जागरूकता के अभाव के कारण शोषण की यह प्रक्रिया बदस्तूर आज भी जारी है। अब प्रश्न उठता है कि दलित

ISSN 0975-735X

लिए कहानीकार एक और हथकंडा अपना रहे हैं अल्पसंख्यक..? विशेषकर मुस्लिम हितैषी होने का। 'आँच की जाँच' कहानी में भी रोशन की जाति क्या है? यह तलाश खातून सलमा और रहमुद्दीन द्वारा रहस्य से पर्दा उठाने पर समाप्त हो जाती है। अभिप्राय है कि इस मुस्लिम परिवार को बड़ा नेक दिखाने का प्रयास कहानीकार ने किया है। इसी अंक में मोहनदास नैमिशराय की कहानी 'निजाम' को पढ़ने का अवसर भी प्राप्त हुआ। यह सोचकर की जयप्रकाश कर्दम की कहानी की भाँति इस कहानी में भी कुछ नयापन हो, परंतु वही 'ढाक के तीन-पात' अर्थात् वही जात-बिरादरी का रोना-धोना। कहानी का थीम भारतीय जेलों की व्यवस्था को उजागर करना है। अँग्रेजों के जमाने से लेकर अब तक सब-कुछ बदल गया किंतु निजाम नहीं बदला, हालाँकि हुक्मरानों की नस्ल बदल गई थी। कहानी में रहमत चाचा इसी निजाम को बदलने की बात बार-बार करता है। विस्तार में न जाते हुए कहानी के कुछ अंशों को ही उद्घाटित करना चाहूँगा उन्हीं से अनुभवी कहानीकार की सोच का अनुमान लगाया जा सकता है। यथा–'हवलदार भी स्वर्ण था और जेलर भी। यहाँ तक वार्डन भी। वे तीनों कैसे सहन कर सकते थे कि सफाई करनेवाले परिवार का कोई आदमी जेल में मैला उठाने से इनकार करे।'[8] इसी प्रकार दूसरा उदाहरण देखिए–'यहाँ कोई ऊँची जात का कैदी नहीं है। लगता है उन्होंने अपराध करना छोड़ दिया है।' उसकी बात सुनकर सभी हँसे थे। पर उनकी हँसी में दर्द था, पीड़ा थी। वे ही क्यों अपराधी बना दिए जाते हैं। यहाँ लगभग पचास कैदियों में जो भी था वह या तो दलित था या आदिवासी, पिछड़ा था या अति पिछड़ा। उनके अलावा अल्पसंख्यक भी। पूरा बहुजन कुनबा था जेल में जिन्हें बिना अपराध के ही यहाँ धकेल दिया गया था। कैसा निजाम था?'[9] पहला उदाहरण देखिए हवलदार, जेलर, वार्डन तीनों सवर्ण? क्या यह महज संयोग है या कहानीकार की सवर्णों के प्रति घृणा। दूसरा उदाहरण जेल में पचास कैदी सभी दलित, आदिवासी, पिछड़े, अल्पसंख्यक? जरा सोचिए यदि इस वाक्य को कोई सवर्ण कथाकार कह देता तो कितना बड़ा बवेला खड़ा हो जाता। आंदोलन की नौबत आ जाती। नए-नए नारे जन्म लेने लगते की यह सवर्णों की दलित वर्गों के प्रति संकीर्ण मानसिकता है। राजनीतिक, सामाजिक आंदोलन हिंसक रूप धारण कर लेते। यहाँ तक की उस साहित्यिक को अपनी जान बचाने के लिए माफीनामा भी देना पड़ जाता।

संदर्भ

1. जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक, हंस, नवंबर 2019, दलित साहित्य, द्वितीय संपान, प्रतिरोध-अधिकार-समता, अक्षर प्रकाशन, प्रा॰ लि॰ अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ॰ 11
2. वही, पृ॰ 16
3. वही, पृ॰ 16
4. वही, पृ॰ 16
5. वही, पृ॰ 18
6. वही, पृ॰ 21
7. वही, पृ॰ 21
8. वही, पृ॰ 10
9. वही, पृ॰ 11

ISSN 0975-735X

'हिंदी क
ई॰ को मध्य प्रदेश
कोशकार थे। जा
पिता पर तर्क, वाह
था। माँ अनूप कुँ
कुछ ज्यादा धैर्य
अपना प्राप्य और
ही सहज भाव से
दो भाई ए
था, किंतु छोटी ह
उन्होंने लेखन के
मन्नू भंडा
ब्रह्मपुरी मोहल्ले
1947 ई॰ में इंट
कलकत्ता चली गा
और बनारस से एम
रहा।"
बालीगंज
से भरी हुई मन्नूज
सब-कुछ था। 'भी
मन्नूजी के जीवन
यहीं मन्नू भंडारी
किया। इसी सदन
साहित्यकार, आलो
गृहस्थ-जीवन में प्र
स्वभाव औ
प्रवृत्ति और जुझारू
से होकर उनके हृद

ISSN 0975-735X